देश के 5 प्रमुख प्रकाशनों की बेस्टसेलर से आज आपके लिए...

किताब का सिर्फ एक पन्ना...

दैनिक भास्कर
न्यूज़रूम बुकलिस्ट

इन रचनाओं को पढ़कर अधूरा महसूस कर रहे हैं...? अगर हां... तो हम यही चाहते हैं कि पढ़ने की यह प्यास आपको किताबों तक ले जाए...इसलिए आज सिर्फ एक पन्ना और उनके खास अंश

साहित्य अकादेमी

हिंदी कहानी संग्रह

संपादक- भीष्म साहनी (हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभ)

संग्रह में से एक अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन...' के अंश

खाना बनाने के बाद सिद्धेश्वरी ने चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की उंगलियों या जमीन पर चलते चींटें-चींटियों को देखने लगी। अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत देर से उसे प्यास लगी है। वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा-भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गई। ख़ाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कहकर वहीं जमीन पर लेट गई।

आधे घंटे तक वहीं उसी तरह पड़ी रहने के बाद उसके जी में जी आया। वह बैठ गई, आंखों को मल-मलकर इधर-उधर देखा और फिर उसकी दृष्टि ओसारे में अध-टूटे खटोले पर सोए अपने छह वर्षीय लड़के प्रमोद पर जम गई। लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियां साफ़ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियां उड़ रही थीं। वह उठी, बच्चे के मुंह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया और एक-आध मिनट सुन्न खड़ी रहने के बाद बाहर दरवाजे पर जाकर किवाड़ की आड़ से गली निहारने लगी। बारह बज चुके थे। धूप अत्यंत तेज़ थी और कभी एक-दो व्यक्ति सिर पर तौलिया या गमछा रखे हुए या मजबूती से छाता ताने हुए फुर्ती के साथ लपकते हुए सामने से गुज़र जाते। दस-पंद्रह मिनट तक वह उसी तरह खड़ी रही, फिर उसके चेहरे पर व्यग्रता फैल गई और उसने आसमान तथा कड़ी धूप की ओर चिंता से देखा। एक-दो क्षण बाद उसने सिर को किवाड़ से काफ़ी आगे बढ़ाकर गली के छोर की तरफ निहारा, तो उसका बड़ा लड़का रामचंद्र धीरे-धीरे घर की ओर सरकता नज़र आया। उसने फुर्ती से एक लोटा पानी ओसारे की चौकी के पास नीचे रख दिया और चौके में जाकर खाने के स्थान को जल्दी-जल्दी पानी से लीपने-पोतने लगी।

-सीमित साधनों में परिवार को संभालने की कहानी। प्रमोद को क्या हुआ होगा? रामचंद्र ने मां से क्या कहा होगा?